अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

कक्षा : ग्यारहवीं – जैन सिद्धान्त रत्नाकर (परीक्षा 29 जुलाई, 2018)

समय : 3 घण्टे अंक : 100

रोल नं.: (अंकों में) .....

(शब्दों में) .....

परीक्षा केन्द्र की कोड संख्या :

केन्द्राधीक्षक/निरीक्षक के हस्ताक्षर

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश–

सावधान

1. परीक्षा में नकल नहीं करें। 2. प्रामाणिकता से परीक्षा देकर ईमानदारी का परिचय दे।
3. मायावी नहीं मेधावी बनें। 4. नकल से नहीं अकल से काम लें।

1. सभी प्रश्नों के उत्तर इसी पत्रक में प्रश्न के नीचे/सामने छोड़े गये रिक्त स्थान में ही लिखें।
2. काली अथवा नीली स्याही का प्रयोग करें, लाल स्याही का नहीं।
3. उत्तीर्ण होने के लिए कम से कम 50 प्रतिशत अंक पाना अनिवार्य है अन्यथा अनुत्तीर्ण माना जाएगा।
4. अधीक्षक, पर्यवेक्षक एवं वीक्षक के निर्देशों का पालन करें।
5. कहीं पर भी अपना नाम अथवा केन्द्र का नाम नहीं लिखें।

जाँचकर्त्ता के प्रयोग हेतु–

प्रश्न क्र.	1	2	3	4	5	कुल योग
प्राप्तांक						
पूर्णांक	10	10	10	28	42	100
पुनः जाँच						

जाँचकर्त्ता के हस्ताक्षर

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- **10x1 = (10)**

(a) 'पत्तिइत्ता' शब्द का अर्थ है -

(क) प्राप्त करके (ख) त्याग करके

(ग) प्रवेश करके (घ) प्रतीति करके ( )

(b) सम्यक्त्व पराक्रम के 73 सूत्रों में से 26वाँ सूत्र है-

(क) वंदणे (ख) संजमे

(ग) पायच्छित्त (घ) कसाय पच्चक्खाणे ( )

(c) किससे जीव सातावेदनीय-कर्मजन्य विषय सुखों की आसक्ति से विरक्त हो जाता है-

(क) धर्मश्रद्धा (ख) आलोचना

(ग) चतुर्विंशति स्तव (घ) वंदना ( )

(d) काल की प्रतिलेखना से किस कर्म का क्षय करता है -

(क) ज्ञानावरणीय (ख) दर्शनावरणीय

(ग) मोहनीय (घ) अन्तराय ( )

(e) तत्त्वार्थ सूत्र किस जगत में अपना विशिष्ट स्थान रखता है -

(क) व्यावहारिक (ख) दार्शनिक

(ग) शैक्षणिक (घ) इनमें से कोई नहीं ( )

(f) साम्परायिक कर्माश्रव के भेद हैं -

(क) 29 (ख) 39

(ग) 49 (घ) 59 ( )

(g) अनन्तानुबन्धी कषाय का बन्ध कौनसे गुणस्थान तक होता है-

(क) 1 (ख) 2

(ग) 4 (घ) 6 ( )

(h) आनुपूर्वी का उदय कौनसे गुणस्थानों में होता है-

(क)1,2,4 (ख) 1,2,5

(ग) 1,2,3 (घ) 1,4,6 ( )

(i) कौनसे आगम में मुनियों को एक वस्त्र, दो वस्त्र अथवा तीन वस्त्र पात्र आदि रखने तथा साध्वियों को चार वस्त्र रखने का विधान किया गया है-

(क) भगवती (ख) अंतगडदसा

(ग) आचारांग (घ) प्रश्नव्याकरण ( )

(j) 'गिरि' शब्द का तृतीया विभक्ति बहुवचन रूप बनता है-

(क) गिरी (ख)गिरीहि

(ग) गिरिहि (घ) गीरीहि ( )

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- **10x1 = (10)**

(a) प्रतिपृच्छना से जीव कांक्षा मोहनीय कर्म को विच्छिन्न कर देता है। ( )

(b) संयम से जीव व्यवदान(विशुद्धि) को प्राप्त करता है। ( )

(c) अप्रतिबद्धता से जीव संगता को प्राप्त करता है। ( )

(d) सद्भाव प्रत्याख्यान से अनिवृत्ति रूप धर्मध्यान के चतुर्थ भेद की प्राप्ति होती है। ( )

(e) त्याग पथ अपनाने पर भी भोगों की ओर रुचि होना समादान क्रिया है। ( )

(f) धन-सम्पत्ति एवं स्वजन-परिजन के प्रति तीव्र ममत्व एवं आसक्ति का भाव बहुआरम्भ है। ( )

(g) असाता का बंध प्रमादी, अप्रमादी दोनों के होता है। ( )

(h) अवेदी में नवमें से लेकर चौदहवें गुणस्थान तक होते हैं। ( )

(i) आत्मोत्थान के लिए व्रतों को ग्रहण करना भाव तीर्थ है। ( )

(j) आर्ष प्रयोगों में पंचमी के स्थान पर तृतीया का प्रयोग पाया जाता है। ( )

प्र.3 मुझे पहचानो :- **10x1 = (10)**

(a) मुझ पर विजय पाने पर जीव को क्षमाभाव प्राप्त होता है। .....

(b) मुझ पर विजय पाने पर जीव ज्ञान दर्शन चारित्र की आराधना के लिये उद्यत होता है। .....

(c) मेरे सेवन से चारित्र-गुप्ति अर्थात् चारित्र-रक्षा उपलब्ध होती है। .....

(d) मेरे आने से जीव विविक्त शयनासन के सेवन से अकिंचनता को प्राप्त करता है। .....

(e) मैं कुशील सेवन की प्रवृत्ति हूँ। .....

(f) शंका, कांक्षा, विचिकित्सा आदि मेरे अतिचार हैं। .....

(g) मैं निर्ग्रन्थों द्वारा प्ररूपित धर्म हूँ। .....

(h) मैं प्राकृत भाषा की वह क्रिया हूँ, जिसका हिन्दी-अर्थ अच्छा लगाना होता है। .....

(i) मैं वह गुणस्थान हूँ, जिसमें किसी भी आयु का बंध नहीं होता। .....

(j) मैं वह गुणस्थान हूँ, जिसमें 87 उत्तर प्रकृतियों की उदीरणा सम्भव है। .....

प्र.4 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-दो पंक्तियों में दीजिए। **14x2 = (28)**

(a) **शरीर के प्रत्याख्यान से जीव किस गुण को प्राप्त करता है ?**

.....

.....

(b) **ऋजुता से जीव को क्या प्राप्त होता है ?**

.....

.....

(c) **दु:ख एवं शोक में क्या अन्तर है?**

.....

.....

(d) **अवर्णवाद किसे कहते हैं ?**

.....

.....

(e) **मैत्री, प्रमोद, कारुण्य एवं मध्यस्थ भावना के विषय क्या-क्या हैं ?**

.....

.....

(f) **स्तेन प्रयोग एवं स्तेनाहृतादान से क्या तात्पर्य है ?**

.....

.....

(g) **दसवें गुणस्थान में कौन-कौनसी मूल एवं उत्तर प्रकृतियों का बंध होता है ?**

.....

.....

(h) **ग्यारहवें गुणस्थान में कौन-कौनसी मूल एवं उत्तर प्रकृतियों का बंध-विच्छेद होता है ?**

.....

.....

(i) **सातवें गुणस्थान में किन-किन मूल एवं उत्तर प्रकृतियों की उदीरणा सम्भव है ?**

.....

.....

(j) **बारहवें गुणस्थान में कौनसी मूल एवं उत्तर प्रकृतियों की सत्ता संभव है ?**

.....

.....

(k) **'स्थानक' शब्द का अर्थ समझाइए।**

.....

.....

(l) **सर्व सावद्य योग से विरत ही वंदनीय-पूजनीय होता है, इसे दशवैकालिक अध्ययन 6 के अनुसार समझाइए।**

.....

.....

(m) **प्राकृत में अनुवाद कीजिए-**

मधु आँख से काणा है। .....

शांति के लिये ध्यान करता है। .....

(n) **प्राकृत में अनुवाद कीजिए-**

चोर से डरता है। .....

वह पाठशाला जाएगी .....

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर तीन-चार पंक्तियों में लिखिए : - **14x3=(42)**

(a) **केवलज्ञान-प्राप्ति के बाद शैलेषी अवस्था कैसे प्राप्त होती है?**

.....

.....

.....

.....

(b) **प्रतिरूपता से जीव किस गुण को प्राप्त करता है तथा उसके प्राप्त होने पर क्या होता है?**

.....

.....

.....

.....

(c) **विनिवर्तना से जीव किस गुण को प्राप्त करता है ?**

.....

.....

.....

.....

(d) **सुख-शांत से जीव को क्या प्राप्त होता है?**

.....

.....

.....

.....

(e) **संभोग प्रत्याख्यान से जीव को क्या प्राप्त होता है ?**

.....

.....

.....

.....

(f) **वीतरागता से जीव को क्या प्राप्त होता है ?**

.....

.....

.....

.....

(g) **सर्वगुणसम्पन्नता से जीव क्या प्राप्त करता है ?**

.....

.....

.....

.....

(h) **भाव सत्य से जीव को किस गुण की प्राप्ति होती है ?**

.....

.....

.....

.....

(i) **भूतव्रत्यनुकम्पा दानं सरागं संयमादि योगः क्षान्ति शौचमिति सद्वेद्यस्य। सूत्र का अर्थ लिखिए।**

.....

.....

.....

.....

(j) **विपरीतं शुभस्य। सूत्र का अर्थ लिखिए।**

.....

.....

.....

.....

(k) **दूसरे गुणस्थान में किन-किन मूल एवं उत्तर प्रकृतियों का बंध सम्भव है?**

.....

.....

.....

.....

(l) **तीसरे गुणस्थान में किन-किन मूल एवं उत्तर प्रकृतियों का उदय सम्भव है?**

.....

.....

.....

.....

(m) **'आरम्भे णत्थि दया' का आशय स्थानकवासी परम्परा के अनुसार स्पष्ट कीजिए।**

.....

.....

.....

.....

(n) **'साहु' शब्द के द्वितीया, तृतीया एवं षष्ठी विभक्ति के रूप लिखिए।**

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....